International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

विवाह समये पाणिग्रहण संस्कारे सप्तपदी महत्वम्

डॉ0 मृत्युन्जय मिश्र
संस्कृत विभाग, सह आचार्य एवं कर्मकाण्ड विशेषज्ञ राजा श्रीकृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर
Author Email: mrityunjaymishram2100@gmail.com

वैदिक परंपरा के अन्तर्गत वर वधू के उत्तान साङ्गुष्ठ दक्षिण हाथ को अपने दाहिने हाथ से पकड़ कर यह मंत्र पढ़े। **ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथाऽऽसः। भगो ऽअर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वा ऽदुर्गार्हपत्यय देवा ।।1।। ॐ अमोऽहमस्मि सा त्वाँ त्वमस्यमो ऽअहम्। सेमोऽहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथ्वी त्वम्।।2।। ॐ तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै। प्रजां प्रजान्यावहै पुत्रान् विन्द्यावहै बहून्।।3।। ॐ ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत श्रृणुयाम शरदः शतम्।।4।।**

अश्मारोहण–
उसके बाद अग्नि के उत्तर पूर्वाभिमुख बैठी हुई वधू का पहले से वहां रखी हुई सिल पर दाहिना पैर राखवाये। **ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वधं स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृत्रन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः।।** मंत्र वधू पढ़ें। इसके बाद वर भी **ॐ सरस्वात प्रदमव सुभगे वाजिनिवति। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः। यस्यां भूतं संभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत। तामद्य गाथां गस्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः।।** पर्यन्त मन्त्रोच्चारण करे और वर वधू को अपने आगे कर प्रणीता और ब्रह्मा सहित **ॐ तुभ्यमग्ने पर्यवहन्तसूर्या वतु ना सहः। पुनः पतिभ्यो जयां दाऽग्ने प्रजाया सह।।** मंत्र पढ़कर अग्नि की परिक्रमा करें।

तदनन्तर वेदी के पीछे खड़े होकर लाजा होम, अँगूठे के हाथ हस्त ग्रहण, अश्मारोहण, गाथागान तथा वर और वधू दोनों अग्नि की प्रदक्षिणा करें। इसी प्रकार तीन बार प्रदक्षिणा करने से नव लाजाहुति, तीन बार वधू का हस्त ग्रहण, तीन बार अश्मारोहण एवं तीन बार गाथागान पूरा होता है–इस तरह नव लाजाहुति सम्पन्न हुई।
पुनः कन्या के भाई द्वारा प्रदत्त अंजलि के बचे हुए लावा को वधू सूप के कोने से **'ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय न मम्'** मंत्र पढकर अग्नि में हवन करें।

पुनः वधु को पीक्षे कर बिना मंत्र के चौथी प्रदक्षिणाा करें। तथा वर बैठकर कुशा द्वारा ब्रह्मा से स्पर्श कर 'ॐ प्रजापतये स्वाहा ' कहकर घी से आहुति देवे। और 'इदं प्रजापतये' कहकर स्त्रुवा में बचे हुए घी को प्रोक्षणीपात्र में छोड़ दें।

सप्तपदी–
तदनन्तर सात स्थान अक्षत–पुंज (अक्षत ढेरी) पर, सुपारी या पान रखकर वर वधू के द्वारा क्रम से ॐ एकमिशे विष्णुस्त्वा नयतु।।1।। द्वितीये–ॐ द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वा नयतु।।2।। तृतीये–ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु।।3।। चतुर्थे–चत्वारि मयोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु।।4।। पंचमे–ॐ पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु। 15।। षष्ठे–ॐ षड्–ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।।6।। सप्तमे–ॐ सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।।7।। मंत्र पढ़कर सात बार स्पर्श कराकर उस ढेरी को हटावें।

पुराणोक्त सप्तपदी श्लोक–
पुराणोक्त सप्तपदी श्लोक सर्वप्रथम कन्या वर से सात श्लोकों द्वारा कहती है,
लब्धोऽसि त्वं माया भर्तः! पुण्यैश्च विविधैः कृतैः। देवी सम्पूजिता नित्यं वंदनीयोऽसि मे सदा।। कन्या ने कहा पतिदेव ! मैने श्रद्धा–भक्ति पूर्वक अनेक पुण्य कर्म किये तथ देवी का पूजन भी किया, इसी से आप पति रूप में हमें प्राप्त हुए हैं। आप निरंतर हमसे पूजनीय हैं।

सुख–दुःखानि कर्माणि गृहस्थस्य भवन्ति हि।
भव सौम्य ! सदैव त्वं कन्या एकमिषे वदेत्।। 1 ।।

गृहस्थाश्रम में सदा सुख–दुःख आते जाते रहते हैं, उसमें आप सदा शान्तचित्त रहें, यह आपसे मेरी पहली मांग है। ।।1।

वापी–कूप–तदागानि यज्ञ–यात्रा–महोत्सवान्।
नाऽऽरम्भेदननुज्ञाय द्वे ऊर्जेऽपि तथा वदेत्।। 2 ।।

हे स्वामिन् ! अब से आप बावली, कूप, तालाब आदि का निर्माण, यज्ञ, यात्रा, उत्सवादि समस्त कार्य मेरी अनुमति के बिना न करें। इस प्रकार कन्या अंगूठे से दूसरी सुपारी हटाकर कहे।। 2 ।।

व्रतोद्यापन–दानानि स्त्रीणां भवाः स्वभावजाः।
कृत्यभङ्गो न ते कार्यस्त्रीणि रयस्तथा वदेत्।। 3।।

हे पतिदेव ! व्रत, उद्यापन, दान आदि करना स्त्रियों का स्वाभाविक धर्म है, इस मेरे कार्य में आप कभी बाधा न डालें। यह मैं आपसे तीसरी मांग करती हूँ।।3।।

स्वकर्मणाऽर्जितं वित्तं पशु–धान्य–धनगमम्।
सर्वं निवेदयेन्मह्यं चत्वरिति तथा वदेत् । 4।।

हे स्वामिन् ! आप अपने पुरुषार्थ द्वारा जो भी धन कमाकर लावें तथा बैल, गाय आदि पशु या अन्न, द्रव्य सभी मुझे समर्पित करें। यह चौथी मांग कन्या ने की। ।। 4।।

गजा–S–श्वादि–पशूनां च हेयोपादेय–कारणम।
अनापृच्छय न कर्त्तव्यं पञ्च पश्विति संवदेत्।।5।।

हे पतिदेव ! आज से आप हाथी, घोड़े आदि पशुओं का खरीदना या बेचना बिना हमसे पूछे न करें। कन्या इस पांचवें वाक्य द्वारा ऐसा कहती है।। 5।।

भूषणानि विचित्राणि रत्न–धातुमयानि च।
दद्यान्न प्रतिगृह्णियात् षड्–ऋतावपि संवदेत् ।।6।।

हे पतिदेव ! समय–समय पर जो आप हमको रत्न और सोने–चांदी धातुओं से बने अनेक प्रकार के आभूषणों एवं चित्र–विचित्र वस्त्रों को दें, उनको पुनः आप लेने का लोभ न करें–यह कन्या अपने छठे वाक्य में कहती हैं।। 6।।

गीत–वादित्र–मांल्यं बंधूनां च गृहे सदा।
अनाहूता गमिष्यामि तदा मां प्रतिपालयेत् ।।7।।

हे स्वामिन् ! अपने भाई–बन्धुओं के घर (एवं मैके में) जब भी मांगलिक कार्य होगा और गाना–बजाना होगा, उस समय मैं बिना बुलाये ही चली जाऊँगी, उस समय आप मुझे अपमानित न करेंगे। अर्थात् उसमें आप बाधा न पहुंचायेंगे। यह कन्या अपने सातवें वाक्य में कहती हैं।।7।।

पंचवाक्यानि वरोक्तानि–

इसी प्रकार वर भी पांच श्लोक कन्या से कहे –

क्रीड़ा–शरीर–संस्कार–समाजोत्सव–दर्शनम्।
हास्यं परगृहे यानं त्यजेत् प्रोषितभर्तृका।।1।।

हे प्रिये ! मेरे घर पर न रहने के समय क्रीडा (हंसी–मजाक), पाउडर, लिपिस्टिक आदि से शरीर सजाना, सामाजिक कार्य, देवदर्शन आदि, हास–परिहास, दूसरे के घर जाना आदि पति के परदेश चले जाने पर आने तक, पतिव्रता स्त्री को नहीं करना चाहिए। इसलिए मैं भी तुमको उपर्युक्त नियमों का पालन करने हेतु सदा सचेष्ट रहने के लिए उपदेश देता हूँ।।1।।

विष्णुर्वैश्वनरः साक्षी ब्राह्मण–ज्ञाति–बन्धवाः।
पंचमं ध्रुवमालोक्य स–साक्षी त्वं ममगताः।।2।।

हे देवी ! विश्वास के साथ इस विवाह में भगवान विष्णु, अग्नि, ब्राह्मणगण, बन्धु–बान्धव और पांचवें ध्रुव नक्षत्र साक्षी के रूप में हैं। इनके साक्षित्व में आज से तुम मेरी पत्नी हुई हो।। 2।।

तव चित्तं मम चित्तं वाचा वाच्यं न लोपयेत्।
व्रते मे सर्वदा देयं हृदयं स्वं वरानने!।3।।

हे वरानने ! तुम इस समय से अपना चित्त मेरे चित्त के अनुसार रखना और हमारी उचित आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं करना। तथा मैं जो कुछ भी तुमसे कहूं, उसे अपने मन में ही रखना और मेरे नियम के अनुकूल अपने हृदय को रखना।।3।।

मम तुष्टिश्च कर्तव्या वन्धूनां भक्तिरादरात्।
ममाऽऽज्ञा परिपल्यैषा पतिव्रतपरायणे!।।4।।

हे पतिव्रते ! तुम्हारा परम कर्तव्य है कि, जिस प्रकार मुझे सन्तोष हो, उसी प्रकार कार्य करना और भाई–बन्धुओं के विषय में आदरपूर्वक भक्तिभाव रखना, एवं सदा मेरे आदेश का पालन करना।। 4।।

विना पत्नी कथं धर्म आश्रमाणां प्रवर्तते।
तस्मात् त्वं मम विश्वस्ता भव वामाङ्गामिनी।।5।।

हे सुमुखि ! पत्नी के बिना गृहस्थाश्रम धर्म का पालन नहीं हो सकता, मूलतः तुम मेरी विश्वासपात्र वामाङ्गी एवं सहधर्मिणी बनो। इन पांच श्लोकों को वर या उसके आचार्य ने कहें।। 5।।

वरकृत अभिषेक–

तत्पश्चात अग्नि के पीछे बैठे वर पर रखे कलश–जल को लेकर आम के पल्लवों से **ॐ आपः शिवाः शितमाः शांताः शांततमस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।** मंत्र पढकर वधू के मस्तक पर छिड़के। पुनः उसी कलश के जल से **ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ।। 1.. ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।। 2.. ॐ तस्मा अरङ्गमाम् वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।3।।** तीन ऋचाओं द्वारा वर के ऊपर जल का सिंचन करें।

इति शम्